# अनाज का संकट बढ़ाती शराब

**प्रमोद भार्गव**

ब्रिटेन की स्वयंसेवी संस्था ऑक्सफेम ने दुनिया में बढ़ रहे खाद्यान्न संकट के सिलसिले में चेतावनी दी है कि अनाज से यदि शराब और इथेनॉल बनाना बंद नहीं किया गया तो 2030 तक खाद्यान्नों की मांग 70 फीसदी बढ़ जाएगी और इनकी कीमतें भी आज के मुकाबले दुगनी हो जाएंगी। इस सच्चाई को भारतीय परिप्रेक्ष्य में तो कतई नहीं झुठलाया जा सकता है, क्योंकि केंद्र की वर्तमान यूपीए सरकार के महज़ सात साल के कार्यकाल में ही खाद्यान्नों की कीमतें डेढ़ सौ से दो सौ फीसदी तक बढ़ चुकी हैं। इस लिहाज़ से ऑक्सफेम के आंकड़ों को मनगढ़ंत नहीं कहा जा सकता।

शराब और इथेनॉल उत्पादन के अलावा वायदा व्यापार भी अनाज की कीमतों में इज़ाफा करने में सहायक हो रहा है। भारतीय अर्थशास्त्रियों की मानें तो भारत में प्रति माह करीब 35 हज़ार करोड़ का वायदा व्यापार होता है।

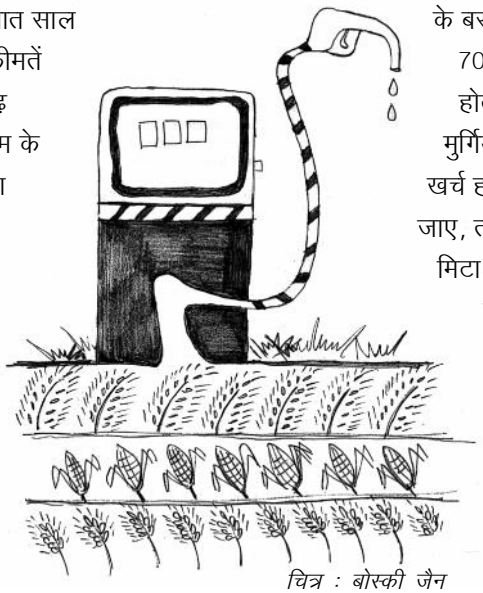

*चित्र : बोस्की जैन*

अकेले महाराष्ट्र में अनाज से शराब बनाने वाली 270 भट्टियों में 75 हज़ार लीटर से डेढ़ लाख लीटर तक शराब रोज़ाना बनाई जा रही है। इथेनॉल बनाने का कारोबार भी हज़ारों टन का आंकड़ा पार कर चुका है। इसके साथ ही मांसाहारियों की बढ़ती तादात भी खाद्यान्न संकट की एक बड़ी वजह बन रही है।

अभी तक भूख के बढ़ते प्रकोप के लिए औद्योगिक विकास, जलवायु परिवर्तन और धरती के गरम होते मिज़ाज को दोषी माना जा रहा था। लेकिन ऑक्सफेम की रिपोर्ट ने स्पष्ट किया है कि अनाज से शराब और ईंधन-इथेनॉल बनाए जाने के हालात खाद्यान्न संकट की पृष्ठभूमि में हैं। उपभोक्तावादी जीवन-शैली का विस्तार भी आग में घी डालने का काम कर रहा है। कुछ लोगों की क्रय शक्ति में बहुत इज़ाफा हुआ है और उपभोग की प्रवृत्ति बड़ी है। इसके साथ ही खाद्यान्नों की खपत में भी वृद्धि हुई है।

जानकारों की मानें तो 100 कैलोरी के बराबर गोमांस तैयार करने के लिए 700 कैलोरी के बराबर अनाज खर्च होता है। इसी तरह बकरे या मुर्गियों के पालन में जितना अनाज खर्च होता है, उतना अगर सीधे खाया जाए, तो वह कहीं ज़्यादा भूखों की भूख मिटा सकता है। ब्रिटिश प्राणीविद जेम्स बेंजामिन का अध्ययन बताता है कि एक मुर्गा जब तक आधा किलो मांस देने लायक होता है, तब तक वह 15 किलोग्राम तक अनाज खा चुका होता है। यह अनाज का दुरुपयोग है।

इधर चीन और भारत में एक वर्ग की बड़ी आय के चलते शराब पीने और मांस खाने वाले लोगों की संख्या बढ़ी है। एक आम चीनी नागरिक अब सालाना औसतन 50 किलोग्राम मांस खा रहा है। जबकि 90 के दशक के मध्य में यह खपत महज़ 20 किलोग्राम थी। इन सबके बावजूद अभी तक ऐसे कोई उपाय नहीं किए जा रहे हैं, जिनसे प्रेरित होकर लोग इस विलासी जीवन से मुक्त हों। बल्कि इन्हें बढावा देने वाली नीतियों को कानून में ढालने का काम किया जा रहा है।

खाद्यान्न संकट गहराने और बढ़ती मंहगाई की जड़ में अमरीका और अन्य युरोपीय देशों द्वारा बड़ी मात्रा में खाद्यान्न का उपयोग जैव ईंधन के निर्माण में किया जाना है। गेहूं, चावल, मक्का, सोयाबीन, गन्ना और रतनजोत आदि फसलों से इथेनॉल और बायोडीज़ल का उत्पादन किया जा रहा है। ऐसा ऊर्जा संसाधनों की ऊंची लागतों को कम करने के लिए वैकल्पिक जैव ईंधनों को बढ़ावा देने के नज़रिए से किया जा रहा है। जैव ईंधन के उत्पादन ने अनाज बाज़ार के स्वरूप को विकृत कर दिया है। अमरीका स्थित अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति शोध संस्थान के जोकिम फॉन ब्रान का मानना है कि जैव ईंधन के बढ़ते उन्माद ने विश्व को खाद्य संकट की ओर धकेला है। यदि इस ईंधन के उत्पादन पर तत्काल रोक लगा दी जाए तो मक्का और गेहूं के दामों में 10 प्रतिशत तक की गिरावट आ सकती है।

भारत में भुखमरी के बदतर हालात होने के बावजूद महाराष्ट्र में अनाज से शराब बनाने के कारखानों में लगातार वृद्धि हो रही है। जबकि महाराष्ट्र ऐसा राज्य है जहां विदर्भ क्षेत्र में गरीबी, भुखमरी और कर्ज़ के चलते ढाई लाख किसान आत्महत्या कर चुके हैं। गरीबी का आकलन करने वाली सुरेश तेंदुलकर समिति ने भी महाराष्ट्र को देश के उन छह राज्यों में शामिल किया है, जहां गरीबी सबसे बदतर हाल में है। इन चौंकाने वाली जानकारियों के बावजूद महाराष्ट्र की राज्य सरकार ने ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को शराब पिलाने का बीड़ा उठाया हुआ है। लिहाज़ा गरीब की भूख शांत करने वाले ज्वार, बाजरा और मक्का से शराब बनाने का सिलसिला धड़ल्ले से जारी है। इस शराब उत्पादन का एक शर्मनाक पहलू यह है कि लोकहित का बहाना लेकर सरकार ने किसानों की बजाय दस रुपए प्रति लीटर सब्सिडी उन उद्योगपतियों को दी है, जो पाउच में शराब बेचकर गरीब की दैनिक मज़दूरी भी निर्ममता से लूट रहे हैं। सरकार का दावा है कि जब ज्वार, बाजरा और मक्का से बड़े पैमाने पर शराब का उत्पादन होगा तो किसान इन फसलों को उपजाना शुरू कर देंगे।

हालांकि राज्य शासन ने शराब उद्योगों से शर्त रखी है कि शराब बनाने के लिए केवल सड़े-गले अनाज का ही उपयोग किया जाए। अन्यथा परमिट रद्द कर दिए जाएंगे। लेकिन भ्रष्टाचार के वर्तमान स्तर को देखते हुए क्या इस नियम का पालन संभव है? फिर क्या इस बात पर भी भरोसा कर लिया जाए कि भारत में रोज़ाना हज़ारों टन अनाज सड़ता है? तय है कि अच्छे अनाज को शराब में बदला जाएगा।

भारत सरकार की नीतियां केवल उपभोक्तावाद को बढ़ावा देने वाली हैं। ऑक्सफेम का आकलन एक चेतावनी है। इसे गंभीरता से लेते हुए एक ऐसी अर्थव्यवस्था गढ़ने की ज़रूरत है, जो समावेशी विकास पर आधारित हो और सकल घरेलू उत्पाद दर बढ़ाने के लिए शराब जैसे सामाजिक रूप से अवांछनीय उत्पादों को प्रोत्साहित करने की ज़रूरत ही न पड़े। ***(स्रोत फीचर्स)***